जयशंकर प्रसाद

जयशंकर प्रसाद ने हिन्दी नाटक को मौलिकता और कलात्मक प्रौढ़ता दी। उनके समय तक जनता में राजनैतिक जागरण का शंखनाद गूँज चुका था। उन्होंने भारतेन्दु युग की धार्मिक राष्ट्रीयता को राजनैतिक राष्ट्रीयता का स्वरूप दिया। वे वर्तमान का प्रतिबिम्ब अतीत के दर्पण में देखते हैं। इसके कारण अतीत और वर्तमान के बीच एक सीधा संवाद स्थापित होता है। जयशंकर प्रसाद इस इतिहास तत्त्व और कला तत्त्व के समन्वय से अपने नाटकों में सांस्कृतिक गुरुता और महत्ता पैदा करते हैं।

जयशंकर प्रसाद के नाटकों में भारतीय नाट्य रचना शैली के अनुरूप कथानक, अर्थप्रकृति, अर्थ सांधियाँ, नायक-प्रतिनायक और रस की योजना की है एवं पाश्चात्य नाट्य शैली के अनुरूप पात्रों में अन्तर्द्वन्द्व की योजना की। भारतेन्दु युग के नाटककारों

ने अपने नाटकों में कथावस्तु और पात्र तो चुने लेकिन पात्रों में अलग-अलग चारित्रिक वैशिष्ट्य निरूपित नहीं किए। चरित्र की कमी पूरी की प्रसाद ने। प्रसाद जी ने अपने नाटकों में रंगमंच की अधीनता स्वीकार नहीं की। वे कहा करते थे "नाटक के लिए रंगमंच होना चाहिए नकि रंगमंच के लिए नाटक।" रंगमंच की उपेक्षा के कारण ही उनके नाटकों में रंग-शिल्प संबंधी कई त्रुटियाँ उभर आयी हैं। प्रसाद के नाटकों की रंगमंचीय असफलता का एक बड़ा कारण है - साहित्यिकता, संस्कृतनिष्ठ भाषा, अति साहित्यिक गीत और लंबे-लंबे संवादों के कारण प्रसाद के नाटक रंगमंच पर सफल नहीं हो पाते। इसका यह भी मतलब नहीं है कि उनके सारे-के-सारे नाटक असफल ही हैं। 'स्कन्दगुप्त' और 'ध्रुवस्वामिनी' को तो राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के मंच पर सफलतापूर्वक मंचित किया गया।

प्रसाद के नाटकों को तीन चरणों में बांटा जा सकता है। पहले चरण के नाटक हैं - 'कल्याणी परिणय', 'जनमेजय का नागयज्ञ', 'करुणालय'। दूसरे चरण के नाटक हैं - 'राज्यश्री' 'अजातशत्रु' तथा तीसरे चरण के नाटक हैं - 'स्कंदगुप्त', 'चन्द्रगुप्त', 'ध्रुवस्वामिनी' प्रसाद के नाटकों में 'जनमेजय का नागयज्ञ' से लेकर 'चन्द्रगुप्त' तक उत्तरोत्तर विकास दिखाई पड़ता है।

चाणक्य नायक है।

'चन्द्रगुप्त'

'चन्द्रगुप्त' प्रसाद का महत्वाकांक्षी नाटक है। प्रसाद ने इस नाटक में एक व्यापक कथा फलक लेकर कई-कई राष्ट्रीय समस्या पर एक साथ विचार किया है। यह चार अंकों का नाटक है और इसके कई उद्देश्य हैं। जैसे - नंदवंश का पतन, विदेशी आक्रमणकारियों से देश को मुक्त करना, अखंड आर्यावर्त का निर्माण और भारतीय सांस्कृतिक श्रेष्ठता का प्रतिपादन। नंदवंश का पतन और विदेशी आक्रमणकारियों से मुक्ति के लक्ष्य को तीन अंकों में ही प्राप्त कर लिया जाता है इसलिए कुछ आलोचकों का कहना है कि नाटक में चौथा अंक आरोपित है। जबकि सच यह है कि इसी अंकमेंप्रसाद अखंड आर्यावर्त का निर्माण कर भारतवासियों में प्रबल राष्ट्रीय चेतना का भाव जगाते हैं। इसी अंक में उन्होंने चन्द्रगुप्त और कार्नेलिया के विवाह को दो संस्कृतियों के संधिपत्र के रूप में निरूपित किया। प्रसादजी ने कार्नेलिया के मुँह से भारत का गौरव-गान कराकर यूनानी संस्कृति पर भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता निरूपित कर दी।